द्वितीय संस्करण 1 फरवरी 2020 मासिक पत्रिका Advt.

राठ बाल वाणी

संतोष देवी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित

राठ बाल वाणी के प्रकाशन का उद्देश्य

वर्तमान समय में बालक टी.वी. एवं मोबाइल की वजह से पुस्तक पढ़ने से दूर होते जा रहे हैं। इससे बालकों के व्यक्तित्व का सही ढंग से विकास नहीं हो पा रहा है। अतः इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य बालकों की सृजनात्मक क्षमता, बौद्धिक क्षमता के साथ उनकी विचार अभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ाना है।

अतः यह राठ क्षेत्र की समस्त विद्यालयों के छात्र-छात्रा अपनी स्वरचित रचना (कविता, कहानी, निबंध) संकल्प कोचिंग बहरोड़ पर प्रतिमाह की 15 तारीख तक भेज सकते हैं या फिर 96362 43674 पर WhatsApp कर सकते हैं।

कविता, कहानी एवं निबंध प्रत्येक विद्या में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को क्रमशः 1100 व 500 रुपये का पुरस्कार एवं ट्रस्ट द्वारा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।

निबंध, कविता, कहानी भेजने से सम्बन्धित निर्देश –

- ☞ कक्षा 6 से कक्षा 12 तक का विद्यार्थी ही रचना भेज सकता है।
- ☞ रचना – निबंध, कहानी एवं कविता के रूप में ही भेजें अन्य रचनाओं को राठ बाल वाणी में स्थान नहीं दिया जायेगा।
- ☞ रचना बालक की मौलिक रचना होनी चाहिए, नकल नहीं होनी चाहिए।
- ☞ विद्यार्थी अपना नाम, पिता का नाम, अपनी कक्षा, पूरा पता एवं विद्यालय का पूरा नाम लिखें।
- ☞ विद्यार्थी अपना पासपोर्ट साईज फोटो भेजें।

प्रेरक लेख

समय अनमोल है

राजकुमार यादव
ज्वाइन्ट कमिश्नर ऑफ इनकम टैक्स
I.R.S.

''मैं समय हूँ मैं निरंतर गतिशील हूँ मैं किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, जो मेरा मूल्य नहीं समझता, मेरा निरादर करता है, वह जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता।''

समय के बारे में ये विचार बताते हैं कि समय कितना कीमती है तथा प्रत्येक व्यक्ति को समय का सदुपयोग करना चाहिये। यदि मनुष्य की धन सम्पत्ति, व्यापार नष्ट हो जाता है तो वापस आ सकता है लेकिन बीता हुआ वक्त वापस नहीं आ सकता है। विद्यार्थी जीवन का समय व्यक्ति की जिंदगी का सबसे महत्त्वपूर्ण समय है, जिस तरह से इसे बिताया जाएगा उसी तरह से उसका आगे का आने वाला जीवन रहेगा। इसलिए जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित कर उसकी प्राप्ति में अपना सर्वस्व लगा देना चाहिए। उचित टाईम टेबल बनाकर अनुशासन पूर्वक अपनी पढ़ाई करनी चाहिए। प्रत्येक सफल और असफल व्यक्ति दोनों के पास समान ही 24 घण्टे प्रतिदिन का वक्त रहता है अन्तर केवल उसके उचित उपयोग का है। अपनी दिनचर्या का उचित पालन करते हुए अपने अध्ययन स्वास्थ्य सामाजिक पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करने वाले व्यक्ति को अपना लक्ष्य प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता है। सभ्यता के आरम्भ से लेकर आज तक की समस्त उपलब्धियाँ समय के सदुपयोग की ही कहानी हैं। यदि महान आविष्कार करने वाले व्यक्ति आज का काम कल पर टालकर बैठे रहते तो मानव समाज उन समस्त आविष्कारों से वंचित रह जाता जो आज जीवन की मूलभूत जरूरतें बनी हुई हैं। मनुष्य और पशु में यही तो वास्तविक अन्तर है कि मनुष्य समय के महत्व को समझकर उसका सदुपयोग कर अपने जीवन को सफल बनाता है। यही अन्तर सफल व असफल व्यक्ति के जीवन का भी है। एक क्षण की देरी करने वाला व्यक्ति अपने जीवन में कोसों पिछड़ जाता है। संसार में जितने भी महान पुरुष हुए हैं वो इस मुकाम तक समय के सदुपयोग से ही पहुँच पाए हैं। मनुष्य का कर्तव्य है कि समय का रोना ना रोए तथा आज से इसी वक्त से लक्ष्य प्राप्ति में लग जाए। जब जागो तब सवेरा।अगर जीवन का कुछ समय व्यर्थ बीत भी गया तो उसका पश्चाताप कर समय बर्बाद किए बिना आज से ही नया लक्ष्य बनाकर जुट जाए। **बीती ताहीं बिसार दे आगे की सुध लेहि** अतः समय की कीमत, उसके मूल्य को समझने वाला व्यक्ति भी मुकाम को हासिल कर सकता है तथा व्यक्ति को अच्छे-बुरे समय का इंतजार किए बिना उसी वक्त से प्रयासों में लग जाना चाहिए।

संत कबीर का यह दोहा समय के महत्व को दर्शाता है-

*** कल करे सो आज कर, आज करे सो अब।**
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।*

अनुशासन

विकास यादव
D.C. (BSF)

जब भी हम किसी सफल व्यक्ति को देखते हैं तो हमारे सामने उस सफल व्यक्ति की अंतिम सफलता के सुनहरे अध्याय ही परिलक्षित होते हैं और हम भी उस सफलता या अंतिम परिणाम के सपने बुनने लगते हैं। हम कभी भी उस सफलता के साधनों या साधना को नहीं देख पाते। उस सफलता के संघर्षों पर हमारा ध्यान नहीं जा पाता। उस सफलता के पीछे के संघर्ष, अनुशासन और समर्पण से आत्मसात या अनुसरण किये बिना हम उस मुकाम तक नहीं पहुँच सकते।किसी भी कार्य को करने के लिए जीवन में अनुशासन बहुत महत्त्वपूर्ण है। सभी के लिए सही तरीके का जीवन जीना या यूँ कह सकते हैं एक खुशहाल जीवन जीना बहुत जरुरी है और यह तभी संभव है जब हम इसमें एक अनुशासन बनाए रख सकें। अनुशासन जहाँ व्यक्ति के जीवन को सरल और सही करता है वहीं उसके जीवन का आधार भी हो सकता है।

विद्यार्थी और अनुशासन – विद्यार्थी का जीवन मनुष्य के भावी जीवन की आधारशिला होता है। विद्यार्थी अनुशासन में रहकर स्वास्थ्य शिक्षा व्यवहार तथा आचार-विचार ग्रहण करता है। नियमित रूप से अध्ययन करना विद्यालय जाना, व्यायाम करना, गुरुजनों का आदर करना। इन सब की शिक्षा उसे विद्यार्थी जीवन में ही मिल जाती है और एक तरह से कह सकते हैं कि अनुशासन की शिक्षा और उनका पालन करना ही विद्यार्थी का कर्त्तव्य है।

अनुशासन की शिक्षा – किसी भी बच्चे का सबसे पहले सम्पर्क अपने माता-पिता से होता है, परिवार से होता है। अन्य प्रकार की शिक्षा के अलावा उसे अनुशासन की शिक्षा भी परिवार से प्राप्त होती है। उसके बाद विद्यालय फिर समाज से अनुशासन की शिक्षा मिलती है।

हम कह सकते हैं कि मानव जीवन का कोई भी कार्य अनुशासन के बिना संभव नहीं हो सकता। विद्यार्थी जीवन में सफलता की धुरी भी अनुशासन होता है। अनुशासन को संभाल कर रखना हमारी जिम्मेदारी है।

संतोष देवी ट्रस्ट के सौजन्य एवं प्रेरणा से

– संकल्प कोचिंग बहरोड़ ने लिया संकल्प –

विधवा, परित्यकता, दिव्यांग, माता-पिता रहित बालकों एवं शहीद परिवारों के बालकों को संकल्प कोचिंग निःशुल्क कोचिंग प्रदान करेगा।

Mob. -8290448374

कविता वर्ग के विजेता

प्रथम विजेता

कविता

चुनावी परिदृश्य पर कविता

वोट डालने–चलो रे साथी, लोकतंत्र के बनों बाराती।
एक वोट से करो बदलाव, नेताजी के बदलो हाव–भाव।।
सही उम्मीदवार का करो चुनाव, बेईमानों को मत दो भाव।
आपका वोट है आपकी ताकत, लोकतंत्र की है ये लागत।।
सुबह सवेरे वोट दे आओ, वोटर आई.डी. संग ले जाओ।
उस इंसान का करो चुनाव, जो पार लगाये देश की नाव।।
मतदान के दिन घर में मत रहना, वरना पाँच साल पडेगा सहना।
भैया, दीदी, चाचा–चाची, वोट देकर आ जाओ जी।।
झाड़ू, कमल, हाथ या हाथी, वोट देकर बनें लोकतंत्र के साथी।
लोकतंत्र का आनंद उठाते हो, फिर वोट क्यों नहीं दे आते हो?
आपके वोट से आयेगा बदलाव।
समाज सुधरेगा, कम होगा तनाव।।

छात्र का नाम – **प्रतीक गुप्ता**
पिता का नाम – **श्री लोकनाथ गुप्ता**
पता – VPO – माजरी कलां
तहसील – नीमराना, अलवर
टैगोर विद्या मन्दिर मा.वि. माजरी कलां
कक्षा – **IXth**

द्वितीय विजेता

कविता

सुनो,
तुम बेटियाँ भी ना, माँ का सौभाग्य हो,
पिता का अभिमान हो, परिवार का सम्मान हो।
सुनो,
तुम बेटियाँ भी ना, सुराही में रखे जल सा ठहराव हो,
समुन्दर सा अथाह प्यार हो।
सुनो,
तुम बेटियाँ भी ना, झाड़ियों में लगी दावानल सी आग हो,
काँटो में खिला एक खूबसूरत गुलाब हो।
सुनो,
तुम बेटियाँ भी ना, गीत की अठारह श्लोक का अनुवाद हो,
मेज पर रखी एक अनपढ़ी सी किताब हो।
सुनो,
तुम बेटियाँ भी ना, चंचल वायु–सा बहाव हो,
धरती के अनंत संयम का परिणाम हो।
सुनो,
तुम बेटियाँ भी ना, माँ के मन में छुपी,
एक अनकही–सी बात हो, पिता की इ्र त का सवाल हो।
सुनो,
तुम बेटियाँ भी ना, काबिल बनो तो,
माता–पिता को मिला, सबसे बड़ा इनाम हो।

छात्रा का नाम – **रेखा सैनी**
पिता का नाम – **श्री मुन्शीराम सैनी**
पता – VPO – **बर्डोद**
रा. भीमराज उ.मा.वि. बर्डोद, बहरोड़ (अलवर)
कक्षा – **XIth**

कहानी वर्ग के विजेता

प्रथम विजेता

''आत्मविश्वास''

एक बार एक व्यापारी था। उसका व्यापार दूर–दूर के देशों में फैला हुआ था। उसके पास किसी चीज की कोई कमी नहीं थी। उसके एक ही पुत्र था जो बहुत आलसी था। व्यापारी उसको हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता लेकिन वह अपने पिता की एक नहीं सुनता था। एक दिन व्यापारी ने उसे कुछ धन देते हुए कहा, जाओ किसी दूसरे देश में जाकर व्यापार करो।

लड़के ने धन लिया और घर से निकल पड़ा। चलते–चलते वह थक गया और जंगल में एक पेड़ के नीचे विश्राम करने लगा। कुछ समय बाद एक शेर अपने शिकार को लेकर आया और उसे खाने लगा। भरपेट खाने के बाद उसने झूठन को वही छोड़ दिया। तभी एक लोमड़ी वहाँ आई और उसके झूठन को खा गई। लड़का यह सब दृश्य देख रहा था। उसने सोचा कि भगवान ने जब सभी को चोंच दी है तो चुगने के लिए दाना भी दिया है। सभी भूखे उठते जरूर हैं लेकिन भूखे सोते नहीं है। शेर ने शिकार करके पेट भरा लेकिन लोमड़ी को बिना कष्ट किये ही भोजन मिल गया फिर मैं व्यापार के लिए दूसरे देश में क्यों भटकूँ? ऐसा सोचकर वह वापस घर आ गया। पुत्र को वापस आया तो व्यापारी चिन्तित हो गया और उसने अपने पुत्र से वापस आने का कारण पूछा। पुत्र ने जंगल की सारी घटना अपने पिता को बताई। सारी बात सुनकर पिता ने पुत्र से कहा, तुम शेर की तरह आत्मविश्वासी बनना चाहते हो या लोमड़ी की तरह असहाय एवं दूसरों पर निर्भर रहना चाहते हो। पुत्र को पिता की बात समझ में आई। उसने कहा मैं शेर की तरह आत्मविश्वासी बनना चाहता हूँ। उसी समय वह व्यापार के लिए निकल गया तथा विदेश में जाकर खूब धन कमाने लगा।

शिक्षा – आत्मविश्वास एक ऐसी औषधि है जो रोगी को रोग मुक्त कर सकती है। आत्मविश्वास से जीवन में कुछ भी हासिल किया जा सकता है। जीने को तो सब जीते हैं, पशु, पक्षी और कीट–पतंग लेकिन आत्मविश्वास से जीने का, होता कुछ न्यारा ही ढंग। यही ढंग सबको समझाएँ, सबके अन्दर आत्मविश्वास जगाएँ।

छात्रा का नाम – **खुशी यादव**
पिता का नाम – **श्री सुधीर सिंह**
तहसील – नीमराना, अलवर
रा.उ.मा.वि. सिलारपुर, नीमराना कक्षा – **XIIth**

द्वितीय विजेता

कहानी ''हमारे पापा'' नैतिक विचार

'पापा' जो कभी एहसास भी नहीं होने देते कि वो हमसे कितना प्यार करते हैं। क्योंकि उन्हें दिखावा करना नहीं आता। वो तो हमारे सो जाने के बाद और सुबह हमारे उठने से पहले होले से चुपके से हम पर अपना प्यार जुटाते है। कहते हैं कि पापा का दिल पत्थर दिल होता है, कोई इनसे पूछके तो देखो कि जब पापा की परी इनसे दूर जाती है तो आँखे नम इनकी भी हो जाती है। ये जानते हुए भी की एक दिन चली जायेगी बेटी पराये घर लेकिन फिर भी वो जी-जान से ज्यादा प्यार करते हैं। पापा ही तो है इस दुनिया में जो सारे दुःख दर्द सहन करने के बाद भी अपनी औलाद को अपने से बड़ा बनाने की सोचते हैं माना कि उन्हें अपने प्यार का दिखावा करना नहीं आता, तो हम क्यूँ उनके प्यार को भूल जाते है कि कड़ी धूप हो या कडाके की ठण्ड, वो हमारे लिये ही तो काम पर जाते हैं क्योंकि उन्हें डर है कि उनकी परवरिश में कोई कमी ना रह जाये। उन्हें डर है कि कहीं उनका बच्चा उनसे पीछे ना रह जाये। पापा कहते नहीं है तो क्या हुआ, मगर बहुत प्यार करते हैं अपने बच्चों से।

नोट – कहानी वर्ग में केवल एक ही कहानी राठ बाल वाणी को प्राप्त हुई। अतः नैतिक विचार को कहानी वर्ग में स्थान दिया गया है।

छात्र का नाम – **लक्ष्य यादव** पिता का नाम – **श्री मनोज यादव**
बालाजी सीनियर सै. स्कूल भुंगारका कक्षा – **XIIth**

निबंध वर्ग के विजेता

प्रथम विजेता

आतंकवाद : एक विश्वव्यापी समस्या

1. प्रस्तावना – वर्तमान में विश्व के समस्त राष्ट्रों को आतंकवाद से संघर्ष करना पड़ रहा है। आज विश्व छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटा हुआ है। जिन्हें हम देश या राष्ट्र कहते हैं। पिछले कई वर्षों से भारत को भी आतंकवाद का सामना पड़ रहा है। आतंकवाद एक अमानवीय कृत्य है।

2. आतंकवाद के कारण – आतंकवाद का मुख्य कारण यह है कि आज राष्ट्र एक दूसरे को भाईचारे की भावना से नहीं देखता है, और राष्ट्रों का प्रतिनिधि करने वाले लोग सम्पूर्ण विश्व को अपने नियंत्रण में लाना चाहते है। जो कि असंभव है। इसलिए राष्ट्र अपने भावी कर्णधारी अर्थात् युवकों को आतंकवाद फैलाने का एक जरिया बनाते है।

3. आतंकवाद को नियंत्रित करने के उपाय – आतंकवाद को नियंत्रित किया जा सकता है। अगर राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों को प्रतिशोध की भावना से न देखे और सभी राष्ट्रों के हित में अपना हित देखे तो आतंकवाद को पूर्णरूप से नियंत्रित किया जा सकता है या फिर जो राष्ट्र आतंकवाद को बढ़ावा देता है उससे बातचीत करके भी आतंकवाद को रोका जा सकता है।

4. आतंकवाद का लक्ष्य – आतंकवाद के जरिए एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों में अपनी विचारधारा का प्रसार करना चाहता है। आतंकवाद दूसरे राष्ट्रों में हिंसा, अराजकता फैलाता है। कुछ विरोधी भावना रखने वाले राष्ट्र आतंकवाद के जरिए दबाना चाहते हैं और उन पर अपना अधिकार करना चाहते है लेकिन उनकी यह मानसिकता पूर्णतः गलत है।

5. उपसंहार – आतंकवाद किसी भी विकासशील देश को विकसित करने में बाधा उत्पन्न करता है। और कुछ राष्ट्र युवकों में धर्म, जाति के आधार पर दूसरे राष्ट्रों के प्रति उनके मन में द्वेष की भावना उत्पन्न करते हैं। जब आतंकवादी किसी के घर को नष्ट कर देते है तो प्रायः यह कहने को मन करता है-

''लोग सारी उम्र लगा देते है एक घर बनाने में।
उनको शर्म नहीं आती बस्तियाँ जलाने में।।''

छात्रा का नाम – **कोविद यादव** पिता का नाम – **स्व. श्री मनीष यादव**
विवेक मा.वि.-गण्डाला, बहरोड़ कक्षा – **IXth**

द्वितीय विजेता

निबंध – वन-संरक्षण

प्रारम्भ से ही प्रकृति तथा मनुष्य का अद्भुत संबंध रहा है। प्रकृति ने ही मानव के लिए जीवनदायक तत्वों को उत्पन्न किया है। प्रारम्भ से ही मनुष्य ने वृक्षों के फल, बीज-जड़े आदि खाकर अपनी भूख मिटाई। अतः पेड़-पौधे हमारे मित्र ही नहीं, जीवनदाता भी है ये वृक्ष हमें केवल खाद्य पदार्थ ही प्रदान नहीं करते बल्कि जीवनदायिनी प्राणवायु (ऑक्सीजन) भी प्रदान करते हैं। पेड़-पौधे वातावरण से अशुद्ध वायु (कार्बनडाई-ऑक्साइड) को ग्रहण करते हैं तथा उसके बदले में हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। पृथ्वी पर हरियाली का स्त्रोत केवल पेड़-पौधे ही है। मनुष्य के अपने स्वार्थ के लिए तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वन-सम्पदा का अंधाधुंध दोहन किया है, जिसके कारण प्राकृतिक असंतुलन उत्पन्न हो गया है। इस असंतुलन को दूर करने के लिए हमें वृक्ष लगाने चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को एक वृक्ष लगाना चाहिए तथा उसका संरक्षण भी करना चाहिए, क्योंकि वन-संरक्षण हमारा परम कर्त्तव्य है।

छात्रा का नाम – **भूपेन्द्र यादव**
पिता का नाम – **श्री डेडराज यादव**
गाँव – **जखराना**
GPS स्कूल भगवाड़ी, बहरोड़
कक्षा – **VIIIth**

Knowledge Corner

1. औपचारिक रूप से सर्वप्रथम संविधान सभा के गठन के विचार का प्रतिपादन किया।
(1) महात्मा गाँधी (2) सरोजनी नायडू
(3) एम.एन. राय (4) बाल गंगाधर तिलक (3)

2. संविधान सभा के विचार को किसने मूर्त रूप प्रदान किया।
(1) बाल गंगाधर तिलक (2) जवाहरलाल नेहरू (2)
(3) दादाभाई नारौजी (4) एम.एन. रॉय

3. संविधान सभा का गठन किसके आधार पर हुआ।
(1) केबिनेट मिशन 1946 (2) क्रिप्स मिशन (1)
(3) माउन्ट बेटेन योजना (4) कोई नहीं

4. केबिनेट मिशन के अनुसार संविधान सभा में कुल कितने सदस्य होने थे।
(1) 292 (2) 296
(3) 389 (4) 402 (3)

5. संविधान सभा में ब्रिटिश प्रान्तों से निर्वाचित सदस्यों की संख्या होनी थी।
(1) 296 (2) 292
(3) 93 (4) 73 (2)

6. सूर्य के संगठन में सहायक गैस है–
(1) ऑक्सीजन और कार्बन डाइऑक्साइड
(2) हीलियम और ऑक्सीजन
(3) हीलियम और नाइट्रोजन (4) हाइड्रोजन और हीलियम (4)

7. एक ग्रह की अपने कक्ष में सूर्य से अधिकतम दूरी को क्या कहा जाता है–
(1) उपसौर (2) अपसौर
(3) अपोजी (4) पेरिजी (2)

8. एक ग्रह की अपने कक्ष में सूर्य से न्यूनतम दूरी को क्या कहा जाता है–
(1) उपसौर (2) अपसौर
(3) अपोजी (4) पेरिजी (1)

9. सूर्य के रासायनिक मिश्रण में हाइड्रोजन का प्रतिशत कितना है–
(1) 71 प्रतिशत (2) 61 प्रतिशत
(3) 75 प्रतिशत (4) 54 प्रतिशत (1)

10. निम्नलिखित में से कौन एक तारा है–
(1) चंद्रमा (2) शुक्र
(3) पृथ्वी (4) सूर्य (4)

11. विक्रम संवत् का प्रारम्भिक व अन्तिम महीना है–
(1) चैत्र, वैशाख (2) वैशाख, माघ
(3) चैत्र, फाल्गुन (4) वैशाख, फाल्गुन (3)

12. शक संवत् (78 ई.) का प्रारम्भ किस शासक द्वारा किया गया ?
(1) अशोक (2) विक्रमादित्य
(3) कनिष्क (4) हर्षवर्धन (3)

13. भारत सरकार ने 1957 में किस संवत् को राष्ट्रीय संवत् घोषित किया?
(1) विक्रम संवत् (2) गुप्त संवत्
(3) हर्ष संवत् (4) शक संवत् (4)
नोट– मेघनाथ शाहा समिति की रिपोर्ट के आधार पर।

14. गुप्त संवत् (319–20 ई.) किस शासक ने चलाया?
(1) कनिष्क (2) चन्द्रगुप्त प्रथम
(3) चन्द्रगुप्त मौर्य (4) हर्षवर्धन (2)

15. हिजरी संवत् प्रारम्भ हुआ–
(1) 570 ई. (2) 622 ई.
(3) 632 ई. (4) 712 ई. (2)

16. पारसेक ***(Parsec)*** इकाई है–
(1) दूरी की (2) समय की
(3) प्रकाश की चमक की (4) चुम्बकीय बल की (1)

17. दाब का मात्रक है–
(1) पास्कल (2) डाइन
(3) अर्ग (4) जूल (1)

18. जूल निम्न की इकाई है–
(1) ऊर्जा (2) बल
(3) दाब (4) तापमान (1)

19. डेसीबल किसे मापने के लिए प्रयोग में लाया जाता है–
(1) रक्त में हीमोग्लोबिन (2) मूत्र में शक्कर
(3) वातावरण में ध्वनि (4) वायु में कण (3)

20. एम्पीयर क्या नापने की इकाई है?
(1) वोल्टेज (2) करेन्ट
(3) प्रतिरोध (4) पावर (2)

बच्चों को गर्म कपड़े व बैग बांटे

बहरोड़। राजकीय महाविद्यालय में शनिवार को राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया गया। जिसमें महाविद्यालय के सभी 133 एनसीसी कैडेटों ने भाग लिया। इस अवसर पर संतोष देवी चेरिटेबल ट्रस्ट जखराना की ओर से सभी एनसीसी कैडेटों को पैन व एनसीसी प्रतियोगिता की पुस्तक व रजिस्टर प्रदान किये गये।
कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. शशि लता सिंह व एनसीसी प्रभारी प्रोफेसर प्रेमपाल यादव ने ट्रस्ट चेयरमैन जयराम यादव व सदस्यों का आभार व्यक्त कर कैडेटों को राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर सेवा करने का आव्हान किया। कार्यक्रम में ट्रस्ट सदस्य अमन कुमार, विपिन यादव, डॉ. हरिप्रसाद अग्रवाल, डॉ. विनय कुमार यादव सहित स्टॉफ मौजूद रहा।

दहमी स्कूल में बच्चों को स्टेशनरी व बैग वितरित किये

172 जरूरतमंदों को कंबल वितरित

बहरोड़। कस्बे के लायंस क्लब के द्वारा मकर संक्रांति पर्व पर जरूरतमंद 71 लोगों को कंबल वितरण किए गए। अध्यक्ष केपी यादव ने बताया कि अग्रवाल समाज के पूर्व अध्यक्ष सत्यनारायण अग्रवाल ने कंबल वितरित किए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि चार्टर प्रेसिडेंट डा. सुरेंद्र यादव रहे। विशिष्ट अतिथि जॉन चेयरमैन विजय सिंह यादव, वैश्य समाज के अध्यक्ष किशन लाल अग्रवाल, हरीप्रसाद अग्रवाल, शिवशंकर गुप्ता, उमेश शर्मा, डॉ. जेआर राव, पमित यादव, कमल शर्मा, माणक चंद अग्रवाल आदि मौजूद रहे। उधर संतोष देवी चैरिटेबल ट्रस्ट जखराना के द्वारा जरूरतमंद लोगों को 101 कंबल वितरण किए गए। भारत विकास परिषद शाखा द्वारा शहर के 15 विभिन्न स्थानों पर दान संग्रह केंद्र स्थापित किए। जिसमें करीब 2.50 लाख रुपए की दान राशि गौ माता के लिए एकत्रित की गई। खाद्य सामग्री बालाजी गौशाला तसींग को भेजी गई। सरबती देवी दिव्यांग सशक्तीकरण केन्द्र पर बच्चों को 23 जोड़े जूते-जुराब बांटे।
मुंडावर : ग्राम चिरूणी स्थित बाबा मनीराम गौशाला में ग्रामीणों ने गौ माता को गुड़ खिलाकर व पूजन कर मकर सक्रांति का त्यौहार मनाया। इस दौरान सुंदरलाल चौधरी, अजीत चौधरी, धर्मपाल बोहरा, मोहरसिंह चौधरी, देवेंद्र योगी, चेतराम चौधरी आदि लोग मौजूद रहे।

ट्रस्ट द्वारा किये गये सामाजिक कार्य की कुछ झलकियाँ

संतोष चैरिटेबल ट्रस्ट जखराना द्वारा राप्रावि कृष्ण नगर स्कूल के सभी बच्चों को पैन, नोट बुक व बैग वितरित किए गए

बहरोड़ (दिनेश यादव)।

गुरूवार को संतोष चैरिटेबल ट्रस्ट जखराना द्वारा राप्रावि कृष्ण नगर स्कूल के सभी बच्चों को पैन, नोट बुक व बैग वितरित किए गए। दानदाता जयराम सेठ द्वारा उक्त बच्चों को सभी सामान दिया गया। इस अवसर पर प्रधानाध्यापिका निर्मला द्वारा भामाशाह का तहे दिल से शुक्रिया अदा किया गया और ये कामना की कि आगे भी वे बच्चों के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।